## Sri Madhvacharya

Sri Madhvacharya, the founder of the Dvaita (dualistic) school of Vedanta, was born around 1238 CE in the village of Pajaka near Udupi, in present-day Karnataka, India. He belonged to a Tulu Brahmin family and exhibited a deep spiritual inclination from an early age. Known for his extraordinary intellect, physical strength, and devotion, he began his formal education under his father, Madhyageha Bhatta, and local scholars.

By the age of 16, Madhvacharya chose to renounce worldly life and took monastic vows (*Sannyasa*) under Achyutapreksha, the head of a local Advaita monastery. However, over time, he developed philosophical ideas that challenged the core tenets of Advaita Vedanta.

Sri Madhvacharya's principal contribution to Indian philosophy was the establishment of Dvaita Vedanta. This dualistic philosophy stood in direct contrast to the non-dualistic Advaita school founded by Adi Shankaracharya. According to Madhvacharya, the individual soul (*jiva*) and the Supreme Being (Vishnu or Narayana) are eternally separate. He strongly asserted the reality of the world, the distinction between God and the soul, and the importance of bhakti (devotion).

Sri Madhvacharya argued that liberation (*moksha*) is achieved not through knowledge alone but through unwavering devotion to Vishnu, adherence to Dharma (righteous duty), and divine grace. His vision placed God as supreme and unchanging, with individual souls in eternal servitude to the divine.

A prolific writer and teacher, Sri Madhvacharya composed numerous works that laid the foundation of Dvaita philosophy. Key among them are:

**Brahma Sutra Bhashya** – A commentary that systematically critiques earlier interpretations, particularly those of Shankaracharya.

- **Bhagavad Gita Tatparya** – A detailed exposition of the Gita's spiritual teachings.
- **Mahabharata Tatparya Nirnaya** – An interpretive text revealing the deeper meanings of the Mahabharata.
- **Upanishad Bhashyas** – Commentaries on select Upanishads, offering dualistic interpretations.
- **Dwadasha Stotra** – A collection of twelve devotional hymns dedicated to Lord Vishnu.

These works, rich in logic and devotion, laid the groundwork for the Dvaita school's development and spread, influencing future generations of thinkers and devotees.

One of Sri Madhvacharya's most enduring legacies is the establishment of the Udupi Krishna Matha, a temple dedicated to Lord Krishna in Udupi. According to legend, he recovered an idol of Krishna from a shipwreck and installed it in the temple, which became the spiritual and organizational center of the Dvaita tradition.

To manage religious and administrative duties, Sri Madhvacharya founded Ashta Mathas (eight monasteries) and appointed his closest disciples as heads. These Mathas continue to function today, playing a central role in preserving and promoting Dvaita Vedanta and the worship of Krishna.

Sri Madhvacharya's teachings left a deep mark on Indian philosophy and devotional practice. His emphasis on the personal relationship between the soul and God resonated deeply with later bhakti movements across India. Communities, especially among Tulu and Kannada-speaking Brahmins, embraced his dualistic teachings and devotional emphasis.

His rational, theistic philosophy offered a strong counter-narrative to Advaita Vedanta and influenced subsequent theological debates. Today, his works are studied by scholars and devotees alike, and the institutions he established remain vibrant centers of learning and spiritual practice.

Sri Madhvacharya is revered not only as a philosopher but also as a saint, mystic, and reformer. His life of devotion, scholarship, and service continues to inspire millions, securing his place as one of the most significant figures in the spiritual and philosophical traditions of India.

India Post proudly releases a Commemorative Postage Stamp honouring the timeless legacy of Sri Madhvacharya, a philosopher and spiritual reformer whose Dvaita Vedanta school profoundly shaped Indian philosophical thought. His teachings continue to illuminate the path of devotion, knowledge, and righteousness.

**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| Stamps/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet | : | Ms. Himani |
| Text | : | Based on information provided by the proponent. |

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS




# श्री मध्वाचार्य
# SRI MADHVACHARYA

विवरणिका
BROCHURE

# श्री मध्वाचार्य

द्वैत वेदांत दर्शन के संस्थापक श्री मध्वाचार्य का जन्म सन् 1238 ईस्वी में उडुपी के निकट पजक गाँव में हुआ था। यह गाँव वर्तमान में भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित है। श्री मध्वाचार्य तुलु ब्राह्मण परिवार से थे। बाल्यकाल से ही उनमें आध्यात्म के प्रति गहरी रुचि थी। अपनी असाधारण मेधा, शारीरिक बल और भक्ति भाव के लिए सुविख्यात श्री मध्वाचार्य ने अपनी औपचारिक शिक्षा अपने पिता, मध्यगेह भट्ट और स्थानीय विद्वानों से प्राप्त की।

16 वर्ष की आयु तक आते–आते उन्होनें सांसारिक जीवन को त्यागकर संन्यास ग्रहण करने का मन बना लिया और वहीं के एक स्थानीय अद्वैत मठ के मुखिया अच्युतप्रेक्ष से दीक्षा ग्रहण की। तथापि, कालांतर में उन्होंने ऐसे दार्शनिक विचार व्यक्त किए जो 'अद्वैत वेदांत' के मूल सिद्धांतों को चुनौती देने वाले थे।

वास्तव में, श्री मध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित 'द्वैत वेदांत' का सिद्धांत भारतीय दर्शन में उनका प्रमुख योगदान माना जाता है। उनका 'द्वैत वेदांत' का द्वैतवादी दर्शन आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवादी 'अद्वैत दर्शन' के बिल्कुल विपरीत था। मध्वाचार्य के अनुसार, जीव और परमात्मा (विष्णु या नारायण) शाश्वत रूप से पृथक हैं। उन्होंने संसार की वास्तविकता, ईश्वर और आत्मा के बीच के अंतर और भक्ति के महत्व पर बल दिया।

श्री मध्वाचार्य का तर्क था कि मोक्ष केवल ज्ञान से नहीं, बल्कि विष्णु के प्रति अटूट भक्ति, धर्म (कर्तव्य) के पालन और ईश्वरीय कृपा से प्राप्त होता है। उनका मत था कि ईश्वर सर्वोच्च एवं शाश्वत है, और आत्मा सदैव ईश्वर के भृत्य में रहती है।

उद्भट दार्शनिक और गुरु होने के साथ ही श्री मध्वाचार्य ने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की और इनके माध्यम से 'द्वैत दर्शन' की नींव रखी। इनमें से प्रमुख ग्रन्थ निम्नानुसार हैं :

- **ब्रह्म सूत्र भाष्य** – इस भाष्य में पूर्ववर्ती व्याख्याओं, विशेषतः शंकराचार्य की व्याख्याओं की व्यवस्थित रूप से समालोचना की गई है।
- **भगवद् गीता तात्पर्य** – गीता की आध्यात्मिक शिक्षाओं की विस्तृत व्याख्या।
- **महाभारत तात्पर्य निर्णय** – महाभारत के गूढ़ अर्थों को उजागर करने वाला व्याख्यात्मक ग्रंथ।
- **उपनिषद भाष्य** – चुनिंदा उपनिषदों पर आधारित भाष्य, जिनमें उनकी द्वैतवादी व्याख्याएं मौजूद हैं।
- **द्वादश स्तोत्र** – भगवान विष्णु को समर्पित बारह भक्ति स्तोत्रों का संकलन।

तर्क और श्रद्धा से भरपूर इन ग्रन्थों ने विचारकों और श्रद्धालुओं की तमाम भावी पीढ़ियों पर गहरा प्रभाव डाला और द्वैत संप्रदाय के विकास तथा प्रचार–प्रसार का आधार तैयार किया।भगवान कृष्ण को समर्पित उडुपी कृष्ण मठ की स्थापना श्री मध्वाचार्य की श्रेष्ठतम चिरस्थायी विरासतों में से एक है। एक दंतकथा के अनुसार, श्री मध्वाचार्य ने भगवान कृष्ण का विग्रह वहाँ एक जहाज के मलबे से प्राप्त किया और उसे मंदिर में स्थापित किया, जो आज द्वैत परंपरा का आध्यात्मिक और संगठनात्मक केंद्र बन चुका है।

इसके अतिरिक्त, उन्होनें धार्मिक तथा प्रशासनिक कार्यों के प्रबंधन हेतु अष्ट मठ (आठ मठों) की स्थापना की और अपने प्रिय शिष्यों को इनका प्रमुख नियुक्त किया। ये मठ आज भी विद्यमान हैं और द्वैत वेदांत तथा कृष्ण भक्ति के सिद्धांतों के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

श्री मध्वाचार्य की शिक्षाओं ने भारतीय दर्शन और भक्ति साधना को गहनता से प्रभावित किया है। उन्होंने आत्मा और ईश्वर के बीच व्यक्तिगत संबंध के सिद्धांत पर बल दिया जो कालांतर में, पूरे भारत में भक्ति आंदोलन की अनुगूँज बन गया। विभिन्न समुदायों, विशेष रूप से तुलु और कन्नड़ भाषी ब्राह्मणों ने उनकी द्वैतवादी शिक्षाओं और भक्ति साधना को अपनाया।

श्री मध्वाचार्य के तर्कप्रधान और आस्तिकतावादी दर्शन में 'अद्वैत वेदांत' से असहमत होते हुए एक सशक्त प्रति–आख्यान प्रस्तुत किया गया है, जिसने तत्पश्चात होने वाले धार्मिक विचार–विमर्श को अत्यधिक प्रभावित किया। वर्तमान में, विद्वान और श्रद्धालु श्री मध्वाचार्य की रचनाओं का समान रूप से अध्ययन करते हैं। इसके अलावा, उनके द्वारा स्थापित संस्थान आज भी शिक्षा और आध्यात्मिक साधना के जीवंत केंद्र बने हुए हैं।

श्री मध्वाचार्य न केवल एक प्रतिष्ठित दार्शनिक, बल्कि एक महान संत, रहस्यवादी और युगप्रवर्तक के रूप में भी विख्यात हैं। भक्ति, विद्वत्ता और सेवा भाव से परिपूर्ण उनका जीवन आज भी कोटि–कोटि लोगों को प्रेरित करता है। कहना न होगा कि वे भारत की आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा की सबसे महत्वपूर्ण हस्तियों में से एक हैं।

डाक विभाग, महान दार्शनिक और 'द्वैत वेदांत' के माध्यम से भारतीय दार्शनिक चिंतन को नई दिशा देने वाले आध्यात्मिक युगप्रवर्तक श्री मध्वाचार्य की चिरस्थाई विरासत के सम्मान स्वरूप स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। उनकी शिक्षाएँ भक्ति, ज्ञान और धर्म के मार्ग को आज भी आलोकित करती हैं।

**आभार :**

डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण, विवरणिका,
विरूपण कैशे : सुश्री हिमानी
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्य | : | 500 पैसे |
| Denomination | : | 500p |
| मुद्रित डाक टिकटें | : | 303480 |
| Stamps Printed | : | 303480 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00